

बाइबिल हमारी पथ प्रदर्शक

The Bible our Guide

“पवित्रशास्त्र तुझे मसीह पर विश्वास करने से उद्धार प्राप्त करने के लिये बुद्धिमान बना सकता है।” (2 तीमुथियुस 3:15)

लेखक: आर. एस. बिंगली

By R.S. Bingley

भूमिका

क्रिस्टडेलफियन (यीशु में भाई और बहन) इस नाम से एक शताब्दी के ज्यादा से जाने गए। उनका उद्देश्य यीशु में विश्वास द्वारा पहली शताब्दी से उसके अनुयायियों की शिक्षा के अनुसार और परमेश्वर की प्रेरण से रचित बाइबिल से शिक्षा लेते हुए जीवन का अनुसरण - करना और जीना है।

वे विश्वास करते हैं कि जो यीशु और उसके प्रेरितों का अनुकरण करते हैं उसकी (यीशु) और शक्ति के लिये और परमेश्वर के क्षमा के लिये देखते हैं वे अपनी आशा में पूरा विश्वास रख सकते हैं कि वह पृथ्वी पर लौटने वाला है जब वह अपने लोगों (विश्वासियों) को अनन्त जीवन प्रदान करेगा। और लम्बे समय से प्रतिज्ञा किये हुए परमेश्वर के राज्य को सामर्थ सहित स्थापित करेगा।

प्रत्येक पाठक से अनुरोध है कि प्रमाण के लिए बाइबिल के दिये हुए अंशों का सावधानी से जांच करते हुए अपने स्वयम् के विचारों की तुलना धर्म शास्त्र की स्पष्ट शिक्षा से करें। यदि परिणाम स्वरूप मन और हृदय को बदलने की बुलाहट आती है तो इसमें कोई सन्देह नहीं कि प्रभु यीशु की शिक्षा और उस पुस्तक (धर्मशास्त्र) जिसमें उसने विश्वास किया, उसका अनुकरण अवश्य ही किया जाना चाहिये।

बाइबिल की मुख्य शिक्षाएँ:-

मात्र एक परमेश्वर (तीन नहीं), परमेश्वर और मनुष्यों के बीच में मध्यस्ता करने वाला एक ही मनुष्य यीशु, जिसने अपने आप को सब के छुटकारे के लिए कुरबान कर दिया। (1 तीमुथियुस 2:5-6)

यीशु का जन्म दाऊद के उत्तराधिकारी के रूप में हुआ, बचपन से ही यीशु बुद्धि और शरीर में परमेश्वर के अनुग्रह में बढ़ा और यीशु हमारी तरह परखा तो गया पर निष्पाप निकला। (लूका 1:32, 2:52; इब्रानियों 4:15)

मनुष्य के भातिं यीशु मरा, दफन हुआ, परन्तु परमेश्वर ने उसे बचा लिया, और उसे मुद्रों में से जिन्दा किया, लेकिन आत्मा में नहीं शरीर में। (1 तीमुथियुस 6:16; फिलिप्पियों 2:9; प्रेरितों के काम 2:31-33, 3:26; इब्रानियों 5:7; लूका 24:39)

यीशु मुद्रों को जिन्दा करने और इस पृथ्वी पर परमेश्वर का राज्य स्थापित करने के लिए पुनः आयेगा। (प्रेरितों के काम 1:11, 3:21; 1 कुरिन्थियों 15:23)

बाइबिल (पवित्र धर्म शास्त्र)

यदि हम मसीही होने का दावा करते हैं तो,

हमें सम्पूर्ण धर्म शास्त्रों में विश्वास करना चाहिये जैसे कि उस में पूरा विश्वास यीशु और उसके प्रेरितों ने किया।

यीशु ने कहा,

“पवित्रशास्त्र की बात असत्य नहीं हो सकती।” (यूहन्ना 10:35)

पौलुस ने कहा,

“सम्पूर्ण पवित्रशास्त्र परमेश्वर की प्रेरणा से रचा गया है और उपदेश, और समझाने, और सुधारने, और धर्म की शिक्षा के लिये लाभदायक है।” (2 तीमुथियुस 3:16)

पतरस ने कहा,

“क्योंकि कोई भी भविष्यद्वाणी मनुष्य की इच्छा से कभी नहीं हुई, पर भक्त जन पवित्रा आत्मा के द्वारा उभारे जाकर परमेश्वर की ओर से बोलते थे।” (2 पतरस 1:21)

पतरस:

“जिनका समाचार अब तुम्हें उनके द्वारा मिला जिन्होंने पवित्रा आत्मा के द्वारा, जो स्वर्ग से भेजा गया, तुम्हें सुसमाचार सुनाया।” (1 पतरस 1:12)

सच्चा विश्वास अवश्य ही परमेश्वर की प्रेरणा से रचित सम्पूर्ण धर्म शास्त्र (बाइबिल) पर निर्धारित होना चाहिये।

मानव प्रकृति

यदि हम मसीही होने का दावा करते हैं तो,

हमें यह मानना चाहिये कि हम पापी और मरने वाले प्राणी हैं, जीवन की आशा केवल मसीह में छोड़ कर और किसी में नहीं।

मूसा ने कहा:

“तू मिट्टी तो है और मिट्टी ही में फिर मिल जाएगा।” (उत्पत्ति 3:19)

भजन संहिता:

“तुम प्रधानों पर भरोसा न रखना, न किसी आदमी पर, क्योंकि उस में उद्धार करने की भी शक्ति नहीं। उसका भी प्राण निकलेगा, वह भी मिट्टी में मिल जाएगा; उसी दिन उसकी सब कल्पनाएँ नष्ट हो जाँगी।” (भजन संहिता 146:3-4)

यशायाह ने कहा:

“सब प्राणी घास हैं, उनकी शोभा मैदान के फूल के समान है। जब यहोवा की साँस उस पर चलती है, तब घास सूख जाती है, और फूल मुर्झा जाता है।” (यशायाह 40:6-7)

याकूब ने कहा:

“तुम्हारा जीवन है ही क्या? तुम तो मानो भाप समान हो, जो थोड़ी देर दिखाई देती है फिर लोप हो जाती है।” (याकूब 4:14)

पतरस:

“क्योंकि हर एक प्राणी घास की नाई है, और उस की सारी शोभा घास के फूल की नाई है: घास सूख जाती है, और फूल झड़ जाता है।” (1 पतरस 1:24)

बाइबिल स्पष्ट करती है, कि हम मरनेवाले प्राणी हैं: केवल जब हम इसको मान लेते हैं जब उसमें दिये गए उद्धार की बात जोह सकते हैं।

धर्मियों का भविष्य

यदि हम मसीही होने का दावा करते हैं तो,

हमें मानना चाहिये कि हमारा प्रतिफल पृथ्वी पर मिलेगा, स्वर्ग में नहीं।

दाऊद ने कहा,

“परन्तु नम्र लोग पृथ्वी के अधिकारी होंगे, और बड़ी शान्ति के कारण आनन्द मनाएँगे।” (भजन संहिता 37:11; मत्ती 5:5)

प्रकाशितवाक्य:

“और उन्हें हमारे परमेश्वर के लिये एक राज्य और याजक बनाया; और वे पृथ्वी पर राज्य करते हैं।” (प्रकाशितवाक्य 5:10)

दानिय्येल ने कहा,

“वह पत्थर जो मूर्ति पर लगा था, वह बड़ा पहाड़ बनकर सारी पृथ्वी में फैल गया ... उन राजाओं के दिनों में स्वर्ग का परमेश्वर, एक ऐसा राज्य उदय करेगा जो अनन्तकाल तक न टूटेगा।” (दानिय्येल 2:35,44)

“धरती पर के राज्य की महिमा, परमप्रधान ही की प्रजा अर्थात् उसके पवित्रा लोगों को दी जाएगी।” (दानिय्येल 7:27)

भजन संहिता:

“स्वर्ग तो यहोवा का है, परन्तु पृथ्वी उसने मनुष्यों को दी है।” (भजन संहिता 115:16)

यूहन्ना:

“कोई स्वर्ग पर नहीं चढ़ा, केवल वही जो स्वर्ग से उतरा, अर्थात् मनुष्य का पुत्र जो स्वर्ग में है।” (यूहन्ना 3:13)

बाइबिल हमें बताती है कि इस समय हमारा प्रतिफल स्वर्ग में मसीह के पास सुरक्षित है, उसके आने पर पृथ्वी पर प्रगट किये जाने के लिये।

पतरस ने कहा,

“एक अविनाशी, और निर्मल, और अजर मीरास के लिये जो तुम्हारे लिये स्वर्ग में रखी है ... उद्धार के लिये, जो आनेवाले समय में प्रगट होनेवाली है ... अनुग्रह की पूरी आशा रखो जो यीशु मसीह के प्रगट होने के समय तुम्हें मिलनेवाला है।” (1 पतरस 1:4-5,13)

पौलुस ने कहा,

“पर हमारा स्वदेश स्वर्ग पर है; और हम पर उद्धारकर्ता प्रभु यीशु मसीह के वहाँ से आने ही बाट जोह रहे हैं ... हमारी दीन-हीन देह का रूप बदलकर ... देगा।” (फिलिप्पियों 3:20-21)

बाइबिल हमें बताती है कि पृथ्वी ही जहाँ परमेश्वर ने आरम्भ में मनुष्यों को रखा वह जगह है जहाँ वे उनकी आशीष पाएंगे।

मृतकों की दशा

यदि हम मसीही होने का दावा करते हैं तो,

हमें इस सत्यता को स्वीकार करना चाहिये कि अधोलोक अचेत अवस्था भी एक जगह है जिसका (अचेत अवस्था) का अन्त केवल पुनरुत्थान ही कर सकता है।

दाऊद ने कहा,

“क्योंकि मृत्यु के बाद तेरा स्मरण नहीं होता; अधोलोक में कौन तेरा धन्यवाद करेगा?” (भजन संहिता 6:5)

हिजकिय्याह ने कहा,

“क्योंकि अधोलोक तेरा धन्यवाद नहीं कर सकता, न मृत्यु तेरी स्तुति कर सकती है; जो कबर में पड़ें वे तेरी सच्चाई की आशा नहीं रख सकते।” (यशायाह 38:18)

पतरस ने कहा,

“दाऊद ... तो मर गया और गाड़ा भी गया और उसकी कब्र आज तक हमारे यहाँ विद्यमान है। ... क्योंकि दाऊद तो स्वर्ग पर नहीं चढ़ा।” (प्रेरितों के काम 2:29,34)

पौलुस ने कहा,

“और यदि मसीह नहीं जी उठा, तो तुम्हारा विश्वास व्यर्थ है, और तुम अब तक अपने पापों में फँसे हो। वरन् जो मसीह में सो गए हैं, वे भी नष्ट हुए। यदि हम केवल इसी जीवन में मसीह से आशा रखते हैं तो हम सब मनुष्यों से अधिक अभागे हैं।” (1 कुरिन्थियों 15:17-19)

पुराने नियम के अधोलोक और कब्र एक ही शब्द हैं और एक ही जगह है। इसी जगह में सब मृतकों को जाना है।

मसीह का पृथ्वी पर लौटना

यदि हम मसीही होने का दावा करते हैं तो,

हमें उसके पहिले के शिष्यों के साथ मिलकर उसके पुनः आगमन की आशा करना, बाट जोहना चाहिये।

यीशु ने कहा,

“मनुष्य का पुत्र अपनी महिमा में आएगा और सब स्वर्गदूत उसके साथ आएँगे।” (मत्ती 25:31)

स्वर्गदूत:

“यही यीशु, जो तुम्हारे पास से स्वर्ग पर उठा लिया गया है, जिस रीति से तुम ने उसे स्वर्ग को जाते देखा है उसी रीति से वह फिर आएगा।” (प्रेरितों के काम 1:11)

पतरस ने कहा,

“और वह (परमेश्वर) यीशु को भेजे जो तुम्हारे लिये पहले ही से ठहराया गया है।” (प्रेरितों के काम 3:20)

पौलुस ने कहा,

“क्योंकि प्रभु आप ही स्वर्ग से उतरेगा; उस समय ललकार, और प्रधान दूत का शब्द सुनाई देगा, और परमेश्वर की तुरही फूँकी जाएगी; और जो मसीह में मरे हैं, वे पहले जी उठेंगे।” (1 थिस्सलुनीकियों 4:16)

अपने पुनः आगमन के द्वारा ही मसीह यीशु इस कार्य को पूर्ण करेगा जिसे उसने जब वह पहले आया था आरम्भ किया था।

यीशु राजा

यदि हम मसीही होने का दावा करते हैं तो,

हमें पूर्ण रूप से विश्वास होना चाहिये कि हमारा प्रभु यीशु मसीह उसके लौटने पर पृथ्वी का राजा होगा।

जिब्राएल ने कहा,

“और परमप्रधान का पुत्रा कहलाएगा; और प्रभु परमेश्वर उसके पिता दाऊद का सिंहासन उसको देगा, और वह याकूब के घराने पर सदा राज्य करेगा; और उसके राज्य का अन्त न होगा।” (लूका 1:32-33)

यीशु ने कहा,

“कभी शपथ न खाना; ... न यरूशलेम की, क्योंकि वह महाराजा का नगर है।” (मत्ती 5:34-35)

यिर्मयाह ने कहा,

“यहोवा की यह भी वाणी है: देख ऐसे दिन आते हैं जब मैं दाऊद के कुल में एक धर्मी अंकुर उगाऊँगा, और वह राजा बनकर बुद्धि से राज्य करेगा, और अपने देश में न्याय और धर्म से प्रभुता करेगा। उसके दिनों में यहूदी लोग बचे रहेंगे, और इस्राएली लोग निडर बसे रहेंगे। और यहोवा उसका नाम "यहोवा हमारी धार्मिकता" रखेगा।” (यिर्मयाह 23:5-6)

जकार्याह ने कहा,

“उस दिन वह जैतून के पर्वत पर पाँव रखेगा ... तब यहोवा सारी पृथ्वी का राजा होगा; और उस दिन एक ही यहोवा और उसका नाम भी एक ही माना जाएगा।” (जकार्याह 14:4,9)

पौलुस ने कहा,

“क्योंकि उस (परमेश्वर) ने एक दिन ठहराया है, जिसमें वह उस मनुष्य के द्वारा धर्म से जगत का न्याय करेगा, जिसे उसने ठहराया है, और उसे मरे हुएों में से जिलाकर यह बात सब पर प्रमाणित कर दी है।” (प्रेरितों के काम 17:31)

पृथ्वी पर यीशु के केवल धर्म के राज्य ही के द्वारा परमेश्वर के लिये सारी पृथ्वी को उसके महिमा से भर देना सम्भव होगा।

परमेश्वर का राज्य

यदि हम मसीही होने का दावा करते हैं तो,

हम इस ज्ञान में आनन्दित रह सकते हैं कि परमेश्वर उसके राज्य को सामर्थ से पृथ्वी पर स्थापित करेगा।

दानिय्येल ने कहा,

“उन राजाओं के दिनों में स्वर्ग का परमेश्वर, एक ऐसा राज्य उदय करेगा जो अनन्तकाल तक न टूटेगा, और न वह किसी दूसरी जाति के हाथ में किया जाएगा। वरन् वह उन सब राज्यों को चूर चूर करेगा, और उनका अन्त कर डालेगा; और वह सदा स्थिर रहेगा।” (दानिय्येल 2:44)

प्रकाशितवाक्य:

“जगत का राज्य हमारे प्रभु का और उसके मसीह का हो गया, और वह युगानुयुग राज्य करेगा ... हे सर्वशक्तिमान प्रभु परमेश्वर, जो है और जो था, हम तेरा धन्यवाद करते हैं कि तू ने अपनी बड़ी सामर्थ्य को काम में लाकर राज्य किया है।” (प्रकाशितवाक्य 11:15-16)

परमेश्वर यथार्थ में उसकी सारी सृष्टि पर राज्य करने वाला है।

दाऊद ने कहा,

“यहोवा ने तो अपना सिंहासन स्वर्ग में स्थिर किया है, और उसका राज्य पूरी सृष्टि पर है।” (भजन संहिता 103:19)

दानिय्येल ने कहा,

“मनुष्यों के राज्य में परमप्रधान ही प्रभुता करता है, और जिसे चाहे वह उसे दे देता है। ... उसकी प्रभुता सदा की है, और उसका राज्य पीढ़ी से पीढ़ी तब बना रहनेवाला है।” (दानिय्येल 4:25,34)

उसने एकबार इस्राएल में अपने राज्य की स्थापना की परन्तु अपने लोगों के कुकर्मों के कारण उसे हटा दिया।

मूसा ने कहा,

“यदि तुम निश्चय मेरी मानोगे, और मेरी वाचा का पालन करोगे ... तुम मेरी दृष्टि में याजकों का राज्य और पवित्रा जाति ठहरोगे।”
(निर्गमन 19:5-6)

दाऊद ने कहा,

“हे हमारे मूल पुरुष इस्राएल के परमेश्वर! अनादिकाल से अनन्तकाल तक तू धन्य है। हे यहोवा! महिमा, पराक्रम, शोभा, सामर्थ्य और वैभव, तेरा ही है; क्योंकि अकाश और पृथ्वी में जो कुछ है, वह तेरा ही है; हे यहोवा! राज्य तेरा है, और तू सभों के ऊपर मुख्य और महान् ठहरा है।’ ... तब सुलैमान अपने पिता दाऊद के स्थान पर राजा होकर यहोवा के सिंहासन पर विराजने लगा और समृद्धशाली हुआ, और इस्राएल उसके अधीन हुआ।” (1 इतिहास 29:10-11, 23)

यहेजकेल ने कहा,

“हे इस्राएल दुष्ट प्रधान, तेरा दिन आ गया है; अधर्म के अन्त का समय पहुँचा है। तेरे विषय में परमेश्वर यहोवा यों कहता है, पगड़ी उतार, और मुकुट भी उतार दे; वह ज्यों का त्यों नहीं रहने का; जो नीचा है उसे ऊँचा कर और जो ऊँचा है उसे नीचा कर। मैं उसको उलट दूँगा और उलट पुलट कर दूँगा; हाँ उलट दूँगा और जब तक उसका अधिकारी न आए तब तक वह उलटा हुआ रहेगा; तब मैं उसे दे दूँगा।” (यहेजकेल 21:25-27)

जब यीशु अपने राज्य को फिर से स्थापित करता है, उपद्रवी इस्राएल को पश्चाताप अवश्य करना है और जो पश्चाताप नहीं करेंगे वे ग्रहण नहीं किये जाएंगे।

जकर्याह ने कहा,

“तब वे मुझे ताकेंगे अर्थात् जिसे उन्होंने बेधा है, और उसके लिये ऐसे रोएँगे जैसे एकलौते पुत्र के लिये रोते-पीटते हैं।” (जकर्याह 12:10; देखिये प्रकाशितवाक्य 1:7)

यीशु ने कहा,

“वहाँ रोना और दाँत पीसना होगा; जब तुम अब्राहम और इसहाक और याकूब और सब भविष्यद्वक्ताओं को परमेश्वर के राज्य में बैठे, और अपने आप को बाहर निकाले हुए देखोगे।” (लूका 13:28)

यीशु सब राज्यों को अधीन कर अपने राज्य को स्थापित करेगा और इससे अधिक उस राज्य को जिस ने उसे क्रूस पर चढ़ाया उसके अधिन होना पड़ेगा।

पाप का उद्गमस्थान (मूल कारण)

यदि हम मसीही होने का दावा करते हैं तो,

हम मानेंगे कि मनुष्य का हृदय (मन) पाप का उद्गम है और मनुष्य जाति में शैतान को पाएँगे जो परमेश्वर का विरोध करता है।

यिर्मयाह ने कहा,

“मन तो सब वस्तुओं से अधिक धोख देनेवाला होता है, उस में असाध्य रोग लगा है।” (यिर्मयाह 17:9)

याकूब ने कहा,

“परन्तु प्रत्येक व्यक्ति अपनी ही अभिलाषा में खिंचकर, और फँसकर परीक्षा में पड़ता है।” (याकूब 1:14)

इब्रानियों:

“इसलिये जब कि लड़के मांस और लोहू के भागी हैं, तो वह आप भी उनके समान उनका सहभागी हो गया; ताकि मृत्यु के द्वारा उसे जिसे मृत्यु पर शक्ति मिली थी, अर्थात् शैतान को निकम्मा कर दे।” (इब्रानियों 2:14)

“पर अब युग के अन्त में वह एक बार प्रगट हुआ है, ताकि अपने ही बलिदान के द्वारा पाप को दूर कर दे।” (इब्रानियों 9:26)

यीशु ने कहा,

“क्योंकि भीतर से, अर्थात् मनुष्य मे मन से, बुरे बुरे विचार, व्यभिचार, चोरी, हत्या, परस्त्रीगमन, लोभ, दुष्टता, छल, लुचपन, कुदृष्टि, निन्दा, अभिमान, और मूर्खता निकलती हैं। ये सब बुरी बातें भीतर ही से निकलती हैं और मनुष्य को अशुद्ध करती हैं।” (मरकुस 7:21-23)

पौलुस ने कहा,

“शरीर के काम तो प्रगट हैं, अर्थात् व्यभिचार, गन्दे काम, लुचपन, मूर्तिपूजा, टोना, बैर, झगड़ा, ईर्ष्या, क्रोध, विरोध, फूट, विधर्म, डाह, मतवालापन, लीलाक्रीड़ा, और इनके जैसे और-और काम हैं, इनके विषय में मैं तुम से पहले से कह देता हूँ, जैसा पहले कह भी चुका हूँ, कि ऐसे ऐसे काम करनेवाले परमेश्वर के राज्य के वारिस न होंगे।”
(गलातियों 5:19-21)

बाइबिल मनुष्य जाति की पापपूर्णता के आरम्भ का पता लगाती है और वह है आदम की बारी में पाप में गिरना। क्रूस पर केवल यीशु के उद्धार के कार्य के द्वारा यह शैतान नाश किया जा सकता है।

परमेश्वर, यीशु मसीह और पवित्र आत्मा

यदि हम मसीही होने का दावा करते हैं तो,

हम अपने प्रभु यीशु के साथ परमेश्वर पिता की प्रधानता को स्वीकार करेंगे; हम यीशु में उसके आज्ञाकारी पुत्र को देखेंगे और पवित्र आत्मा में उसके (परमेश्वर के) व्यक्तिगत सामर्थ को हम देखेंगे।

पौलुस ने कहा,

“परमेश्वर एक ही है, और परमेश्वर और मनुष्यों के बीच में भी एक ही बिचवई है, अर्थात् मसीह यीशु जो मनुष्य है।” (1 तीमुथियुस 2:5)

“मसीह का सिर परमेश्वर है।” (1 कुरिन्थियों 11:3)

“और जब सब कुछ उसके आधीन हो जाएगा, तो पुत्र आप भी उसके आधीन हो जाएगा, जिसने सब कुछ उसके आधीन कर दिया, ताकि सब में परमेश्वर ही सब कुछ हो।” (1 कुरिन्थियों 15:28)

“एक ही देह है, और एक ही आत्मा; जैसे तुम्हें जो बुलाए गए थे अपने बुलाए जाने से एक ही आशा है। एक ही प्रभु है, एक ही विश्वास, एक ही बपतिस्मा, और सब का एक ही परमेश्वर और पिता है, जो सब के ऊपर और सब के मध्य में और सब में है।” (इफिसियों 4:4-6)

यीशु ने कहा,

“पिता मुझ से बड़ा है।” (यूहन्ना 14:28)

“पुत्र आप से कुछ नहीं कर सकता, केवल वह जो पिता को करते देखता है।” (यूहन्ना 5:19)

“यदि तुम मेरी आज्ञाओं को मानोगे, तो मेरे प्रेम में बने रहोगे; जैसा कि मैं ने अपने पिता की आज्ञाओं को माना है, और उसके प्रेम में बना रहता हूँ।” (यूहन्ना 15:10)

“तौभी मेरी नहीं परन्तु तेरी ही इच्छा पूरी हो।” (लूका 22:42)

जिब्राईल स्वर्गदूत ने कहा,

“पवित्र आत्मा तुझ पर उतरेगा, और परमप्रधान की सामर्थ्य तुझ पर छाया करेगी; इसलिये वह पवित्र जो उत्पन्न होनेवाला है, परमेश्वर का पुत्र कहलाएगा।” (लूका 1:35)

पतरस ने कहा,

“भक्त जन पवित्र आत्मा के द्वारा उभारे जाकर परमेश्वर की ओर से बोलते थे।” (2 पतरस 1:21)

“परमेश्वर ने किस रीति से यीशु नासरी को पवित्र आत्मा और सामर्थ्य से अभिषेक किया।” (प्रेरितों के काम 10:38)

बाइबिल परमेश्वर के सब अर्थप्राय को यीशु में केन्द्रित करती है अर्थात् उसके पुत्र में और परमेश्वर के काम भविष्यवक्ताओं, प्रेरितों और संतो में उसकी ही सामर्थ्य द्वारा अर्थात् पवित्र आत्मा द्वारा प्रगट करती है।

यीशु मसीह में विश्वास

यदि हम मसीही होने का दावा करते हैं तो,

इस जानेंगे कि यीशु में विश्वास आवश्यक है। एक मसीही को मसीह का हो सकने के पहिले सच्चे सुसमाचार को ग्रहण करना जरुरी है।

यीशु ने कहा,

“क्योंकि परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम रखा कि उसने अपना एकलौता पुत्र दे दिया, ताकि जो कोई उस पर विश्वास करे वह नष्ट न हो, परन्तु अनन्त जीवन पाए।” (यूहन्ना 3:16)

“यदि तुम विश्वास न करोगे कि मैं वहीं हूँ तो अपने पापों में मरोगे।” (यूहन्ना 8:24)

पौलुस ने कहा,

“क्योंकि (मसीह का सुसमाचार) ... हर एक विश्वास करनेवाले के लिये, पहले तो यहूदी फिर यूनानी के लिये, उद्धार के निमित्त परमेश्वर की सामर्थ्य है।” (रोमियों 1:16)

“यदि तू अपने मुँह से यीशु को प्रभु जानकर अंगीकार करे, और अपने मन से विश्वास करे कि परमेश्वर ने उसे मरे हुआँ में से जिलाया, तो तू निश्चय उद्धार पाएगा।” (रोमियों 10:9)

इब्रानियों:

“और विश्वास बिना उसे प्रसन्न करना अनहोना है; क्योंकि परमेश्वर के पास आनेवाले को विश्वास करना चाहिए कि वह है, और अपने खोजनेवालों को प्रतिफल देता है।” (इब्रानियों 11:6)

और झूठी शिक्षा के विरुद्ध एक चेतावनी

पौलुस ने कहा,

“परन्तु यदि हम, या स्वर्ग से कोई दूत भी उस सुसमाचार को छोड़ जो हम ने तुम को सुनाया है, कोई और सुसमाचार तुम्हें सुनाए, तो शापित हो।” (गलातियों 1:8)

यीशु ने कहा,

“सकेत फाटक से प्रवेश करो, क्योंकि चौड़ा है वह फाटक और सरल है वह मार्ग जो विनाश को पहुँचाता है; और बहुत से हैं जो उस से प्रवेश करते हैं। क्योंकि सकेत है वह फाटक और कठिन है वह मार्ग जो जीवन को पहुँचाता है; और थोड़े हैं जो उसे पाते हैं।” (मत्ती 7:13-14)

बाइबिल हमें यह छुट्टी नहीं देती है कि उद्धार यूँ ही मिल जाएंगे। पापियों के लिये केवल एक ही तरीका है वह आज्ञापालन द्वारा यीशु के पीछे चलना, उस में और परमेश्वर के वचन में विश्वास जिसका वह (यीशु) प्रतिपालन करता था।

क्रूस को उठाना

यदि हम मसीही होने का दावा करते हैं तो,

हम अपनी दैहिक प्रकृति की दुर्बलता और अंहकार का त्याग करना चाहेंगे और क्रूस पर यीशु की मृत्यु को आदर्श रखते हुए इस प्रकृति का दमन करेंगे।

यीशु ने कहा,

“यदि कोई मेरे पीछे आना चाहे, तो अपने आप का इन्कार करे और अपना क्रूस उठाए, और मेरे पीछे हो ले।” (मत्ती 16:24)

पौलुस ने कहा,

“जैसा मसीह यीशु का स्वभाव था वैसा ही तुम्हारा भी स्वभाव हो; जिस ने ... अपने आप को दीन किया, और यहाँ तक आज्ञाकारी रहा कि मृत्यु, हाँ, क्रूस की मृत्यु भी सह ली। इस कारण परमेश्वर ने उसको अति महान् भी किया, और उसको वह नाम दिया जो सब नामों में श्रेष्ठ है।” (फिलिप्पियों 2:5-11)

“हमारा पुराना मनुष्यत्व उसके साथ क्रूस पर चढ़ाया गया ताकि पाप का शरीर व्यर्थ हो जाए, और हम आगे को पाप के दासत्व में न रहें।” (रोमियों 6:6)

“मैं मसीह के साथ क्रूस पर चढ़ाया गया हूँ, अब मैं जीवित न रहा, पर मसीह मुझ में जीवित है; और मैं शरीर में अब जो जीवित हूँ तो केवल उस विश्वास से जीवित हूँ जो परमेश्वर के पुत्र पर है, जिस ने मुझ से प्रेम किया और मेरे लिये अपने आप को दे दिया।” (गलातियों 2:20)

“और जो मसीह यीशु के हैं, उन्होंने शरीर को उसकी लालसाओं और अभिलाषों समेत क्रूस पर चढ़ा दिया है।” (गलातियों 5:24)

“पर ऐसा न हो कि मैं अन्य किसी बात का घमण्ड करूँ, केवल हमारे प्रभु यीशु मसीह के क्रूस का, जिसके द्वारा संसार मेरी दृष्टि में

और मैं संसार की दृष्टि में क्रूस पर चढ़ाया गया हूँ” (गलातियों 6:14)

यीशु ने कहा,

“ये वे हैं, जो उस महाक्लेश में से निकलकर आए हैं; इन्होंने अपने-अपने वस्त्रा मेम्ने के लोहू में धोकर श्वेत किए हैं।” (प्रकाशितवाक्य 7:14)

क्रूस पर अपनी मृत्यु द्वारा यीशु ने पाप की शक्ति का नाश कर दिया, उसका बन्धन तोड़ डाला और वह अब सिद्ध और अमर है (उसने अमरता को पहिन लिया है)। वे जो मसीह के साथ अपने पुराने मनुष्यत्व को क्रूस पर चढ़ाते हैं और उसके पीछ चलने का प्रयास करते हैं वे उस हेतु उसकी सहायता पाएंगे।

सच्चा बपतिस्मा

यदि हम मसीही होने का दावा करते हैं तो,

हम जानते होंगे कि हमें यीशु की आज्ञा का पालन करना है बपतिस्मा द्वारा विश्वास में बने रहना।

यीशु:

“अब तो ऐसा ही होने दे, क्योंकि हमें इसी रीति से सब धार्मिकता को पूरा करना उचित है, ... और यीशु बपतिस्मा लेकर तुरन्त पानी में से ऊपर आया ... और देखो, यह आकाशवाणी हुई, ‘यह मेरा प्रिय पुत्र है, जिससे मैं अत्यन्त प्रसन्न हूँ।’” (मत्ती 3:15-17)

“जो विश्वास करे और बपतिस्मा ले उसी का उद्धार होगा, परन्तु जो विश्वास न करेगा वह दोषी ठहराया जाएगा।” (मरकुस 16:16)

“जब तक कोई मनुष्य जल और आत्मा से न जन्मे तो वह परमेश्वर के राज्य में प्रवेश नहीं कर सकता।” (यूहन्ना 3:5)

पतरस ने कहा,

“मन फिराओ, और तुम में से हर एक अपने अपने पापों की क्षमा के लिये यीशु मसीह के नाम से बपतिस्मा ले ... अतः जिन्होंने उसका वचन ग्रहण किया उन्होंने बपतिस्मा लिया ... और वे प्रेरितों से शिक्षा पाने, और संगति रखने, और रोटी तोड़ने, और प्रार्थना करने में लौलीन रहे।” (प्रेरितों के काम 2:38, 41-42)

पौलुस ने कहा,

“हम सब जिन्होंने मसीह यीशु का बपतिस्मा लिया, तो उसकी मृत्यु का बपतिस्मा लिया। अतः उस मृत्यु का बपतिस्मा पाने से हम उसके साथ गाड़े गए।” (रोमियों 6:3-4)

बाइबिल में बपतिस्मा पानी में एक गाड़ा जाना है वह उनके द्वारा लिया जाता है जिन्होंने अपने पापों को अंगीकार करने अपने पुराने जीवनो को

क्रूस पर चढ़ाने और गाड़ने और फिर मसीह में एक नया जीवन आरम्भ करने की इच्छा प्रकट की है।

मसीही जीवन

यदि हम मसीही होने का दावा करते हैं तो,

हम यीशु के जीवन को आदर्श रखते हुए उसका अनुसरण करना चाहेंगे, उसकी आज्ञाओं का पालन करेंगे, उसकी मृत्यु स्मरण रखेंगे, और संसार से अपने को दूषित न होने देंगे।

यीशु ने कहा,

“यदि तुम मुझ से प्रेम रखते हो, तो मेरी आज्ञाओं को मानोगे।”
(यूहन्ना 14:15)

“मैं तुम्हें एक नई आज्ञा देता हूँ कि एक दूसरे से प्रेम रखो।” (यूहन्ना 13:34)

“अपनी तलवार म्यान में रख ले क्योंकि जो तलवार चलाते हैं, वे सब तलवार से नष्ट किए जाएँगे।” (मत्ती 26:52)

यीशु ने कहा,

“तुम न तो संसार से और न संसार में की वस्तुओं से प्रेम रखो ... क्योंकि जो कुछ संसार में है, अर्थात् शरीर की अभिलाषा और आँखों की अभिलाषा और जीविका का घमण्ड, वह पिता की ओर से नहीं परन्तु संसार ही की ओर से है।” (1 यूहन्ना 2:15-16)

पौलुस और यीशु:

“क्योंकि यह बात मुझे प्रभु से पहुँची, और मैं ने तुम्हें भी पहुँचा दी कि प्रभु यीशु ने जिस रात पकड़वाया गया, रोटी ली, और धन्यवाद करके उसे तोड़ी और कहा, ‘यह मेरी देह है, जो तुम्हारे लिये है: मेरे स्मरण के लिये यही किया करो।’ इसी रीति से उसने बियारी के पीछे कटोरा भी लिया और कहा, ‘यह कटोरा मेरे लहू में नई वाचा है: जब कभी पीओ, तो मेरे स्मरण के लिये यही किया करो।’ क्योंकि जब कभी तुम यह रोटी खाते और इस कटोरे में से पीते हो, तो प्रभु की

मृत्यु को जब तक वह न आए, प्रचार करते हो।” (1 कुरिन्थियों
11:23-26)

बाइबिल इसलिये सच्चे मसीहियों को यथाक्रम रोती तोड़ने में प्रभु को स्मरण रखने, निरन्तर अपने जीवनोँ में उसकी याद बनाए रखने और हमेशा उसके फिर से आने की बाट जोटने के लिये प्रोत्साहित करती है।

पुनरुत्थान और न्याय

यदि हम मसीही होने का दावा करते हैं तो,

हम जानते होंगे एक दिन हमें प्रभु यीशु के सन्मुख जो उस समय हमारा न्यायधीश होगा आशा, पाने या दोषी ठहराए जाने के लिये अवश्य खड़ा होना पड़ेगा।

यीशु ने कहा,

“जो जो निकम्मी बातें मनुष्य कहेंगे, न्याय के दिन वे हर एक बात का लेखा देंगे। क्योंकि तू अपनी बातों के कारण निर्दोष, और अपनी बातों ही के कारण दोषी ठहराया जाएगा।” (मत्ती 12:36-37)

पौलुस ने कहा,

“क्योंकि अवश्य है कि हम सब का हाल मसीह के न्याय आसन के सामने खुल जाए, कि हर एक व्यक्ति अपने अपने भले बुरे कामों का बदला जो उसने देह के द्वारा किए हों पाए।” (2 कुरिन्थियों 5:10)

दानिय्येल ने कहा,

“जो भूमि के नीचे सोए रहेंगे उन में से बहुत से लोग जाग उठेंगे, कितने तो सदा के जीवन के लिये, और कितने अपनी नामधराई और सदा तक अत्यन्त घिनौने ठहरने के लिये।” (दानिय्येल 12:2)

प्रकाशितवाक्य:

“पर तेरा प्रकोप आ पड़ा, और वह समय आ पहुँचा है कि मरे हुआँ का न्याय किया जाए, और तेरे दास भविष्यद्वाक्ताओं और पवित्र लोगों को और उन छोटे बड़ों को जो तेरे नाम से डरते हैं बदला दिया जाए, और पृथ्वी के बिगाड़नेवाले नष्ट किए जाएँ।” (प्रकाशितवाक्य 11:18)

प्रेरितों के काम,

“...धर्मी और अधर्मी दोनों का जी उठना होगा।’ ... जब वह धर्म, और संयम, और आनेवाले न्याय की चर्चा कर रहा था, तो फेलिक्स ने भयभीत ...” (प्रेरितों के काम 24:15,25)

पतरस ने कहा,

“वे [जो भारी लुचपन में रहते हैं] उसको जो जीवतों और मरे हुआओं का न्याय करने को तैयार हैं, लेखा देंगे।” (1 पतरस 4:5)

उन सभी को जिन्होंने ने परमेश्वर के प्रति अपने कर्तव्य को समझ लिया है, चाहे उन्होंने उसे ग्रहण किया है या अस्वीकार किया या उपेक्षा की हो, प्रभु के न्याय सिंहासन के सामने आशीष के या तिरस्कार किये जाने के लिए अवश्य खड़े होना है।

यीशु ने कहा,

“जब मनुष्य का पुत्र अपनी महिमा में आएगा और सब स्वर्गदूत उसके साथ आएँगे, तो वह अपनी महिमा के सिंहासन पर विराजमान होगा। और सब जातियाँ उसके सामने इकट्ठा की जाएँगी; और जैसे चरवाहा भेड़ों को बकरियों से अलग कर देता है, वैसे ही वह उन्हें एक दूसरे से अलग करेगा। वह भेड़ों को अपनी दाहिनी ओर और बकरियों को बाईं ओर खड़ा करेगा। तब राजा अपनी दाहिनी ओर वालों से कहेगा, ‘हे मेरे पिता के धन्य लोगो, आओ, उस राज्य के अधिकारी हो जाओ, जो जगत के आदि से तुम्हारे लिये तैयार किया गया है।’ ... तब वह बाईं ओर वालों से कहेगा, ‘हे शापित लोगो, मेरे सामने से उस अनन्त आग में चले जाओ, जो शैतान और उसके दूतों के लिये तैयार की गई है...’” (मत्ती 25:31-34,41)

“काना होकर परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करना तेरे लिये इससे भला है कि दो आँख रहते हुए तू नरक में डाला जाए।” (मरकुस 9:47)

बाइबिल में बताई गई आग का अर्थ है उस हर चीज का सर्वनाश जो न्याय से समय में परमेश्वर की दृष्टि में घिनैनी है, उसे अप्रसन्न करने वाली है। यह “अनन्त काल की आग” और “आग की झील” भी कहलाती है।

महिमायुक्त (वैभवशाली) अंत

यदि हम मसीही होने का दावा करते हैं तो,

हम उस समय की प्रतीक्षा करेंगे जब मसीह के कार्य से पृथ्वी की सारी अशुद्धता जाती रहेगी और परमेश्वर की महिमा से परीपूर्ण हो जाएगी।

मूसा के द्वारा,

“परन्तु मेरे जीवन की शपथ सचमुच सारी पृथ्वी यहोवा की महिमा से परिपूर्ण हो जाएगी।” (गिनती 14:21)

भजन संहिता:

“हे परमेश्वर, राजा को अपना नियम बता, राजपुत्र को अपना धर्म सिखला! वह तेरी प्रजा का न्याय धर्म से, और तेरे दीन लोगों का न्याय ठीक ठीक चुकाएगा। ... धन्य है यहोवा परमेश्वर, जो इस्राएल का परमेश्वर है; आश्चर्यकर्म केवल वही करता है। उसका महिमायुक्त नाम सर्वदा धन्य रहेगा; और सारी पृथ्वी उसकी महिमा से परिपूर्ण होगी।” (भजन संहिता 72:1-2, 18-19)

यशायाह ने कहा,

“मेरे सारे पवित्र पर्वत पर न तो कोई दुःख देगा और न हानि करेगा; क्योंकि पृथ्वी यहोवा के ज्ञान से ऐसी भर जाएगी जैसा जल समुद्र में भरा रहता है।” (यशायाह 11:9)

हबक्कूक ने कहा,

“क्योंकि पृथ्वी यहोवा की महिमा के ज्ञान से ऐसी भर जाएगी जैसे समुद्र जल से भर जाता है।” (हबक्कूक 2:14)

पौलुस ने कहा,

“इसके बाद अन्त होगा। उस समय वह सारी प्रधानता, और सारा अधिकार, और सामर्थ्य का अन्त करके राज्य को परमेश्वर पिता के

हाथ में सौंप देगा। क्योंकि जब तक कि वह अपने बैरियों को अपने पाँवों तले न ले आए, तब तक उसका राज्य करना अवश्य है। सब से अन्तिम बैरी जो नाष्ट किया जाएगा, वह मृत्यु है।” (1 कुरिन्थियों 15:24-26)

प्रकाशितवाक्य:

“मृत्यु और अधोलोक आग की झील में डाले गए।” (प्रकाशितवाक्य 20:14)

“देख, परमेश्वर का डेरा मनुष्यों के बीच में है। वह उनके साथ डेरा करेगा, और वे उसके लोग होंगे, और परमेश्वर आप उनके साथ रहेगा और उनका परमेश्वर होगा। वह उनकी आँखों से सब आँसू पोंछ डालेगा; और इसके बाद मृत्यु न रहेगी, और न शोक, न विलाप, न पीड़ा रहेगी; पहली बातें जाती रहीं।” (प्रकाशितवाक्य 21:3-4)

इस तरह बाइबिल दर्शित करती है कि कैसे सृष्टि के निर्माण में पूर्णता का अभिप्राय परमेश्वर के सब सच्चे भक्त जनों की उपस्थिति में पूरा किया जाएगा।

मृत्यु के बाद क्या? बाइबिल का एक महत्वपूर्ण सन्देश जिसे प्रत्येक को पडना चाहिए। लेखक - फ्रेड पियर्स

पत्राचार द्वारा 22 (बाईस) पाठो का पाठ्यक्रम

कृपया मुफ्त में पुस्तक और, पत्राचार द्वारा बाइबिल का पाठ्यक्रम प्राप्त करने हेतु इस पते पर लिखे:-

दि क्रिस्टडेलफियन
पो. बा. न. - 10, मुजफ्फरनगर
(यूपी) - 251002
ई-मेल
cdelph_mzn@yahoo.in

दि क्रिस्टडेलफियन
पो. बा. न. - 50, गाजियाबाद
(यूपी) - 201001
ई-मेल
christadelphiansdelhi@gmail.com

The Christadelphians
P.O. Box 50,
Ghaziabad, 201001, U.P.
christadelphiansdelhi@gmail.com

or for more information, visit us at christadelphians.in.